



THE  
MENTORING  
PROJECT

# एक धर्मी जीवनसाथी को पाना



THE CHRISTIAN  
LINGUA TEAM

एक धर्मी जीवनसाथी  
को पाना



**THE CHRISTIAN LINGUA TEAM**

## वरुषरुतु-सूकुकु

अंतुतुतु वरुकरु	4
सलु I: डरुडुडल ँक धरुतुतु कुकुवनसरुथुकु के वरुषरुतु तुरु कुरु कहरुतुकु डुतु?	5
सलु II: ँक धरुतुतु संडुंध के लरुल सुवरुतुतु कु तुतुतु करुनरु	13
सलु III: वरुवुकु और डरुतुशुवरु कुकु इकुकुडरु कु सुकुऑनरु	20
सलु IV: डसुकुड-कुतुदुरुतु वरुवरुह करु नरुतुरुण	26
अंतुतुतु वरुकरु	32

एक धर्मी जीवनसाथी को पाना



## विषय-सूची

सही जीवनसाथी पाना केवल प्रेम और आकर्षण से संभव नहीं है; इसके लिए विश्वास और प्रयास दोनों ही आवश्यक हैं। विवाह केवल एक संबंध नहीं है; यह परमेश्वर द्वारा स्थापित एक वाचा है, जिसमें अटूट प्रेम और समर्पण की आवश्यकता होती है। इसी कारण, जीवनसाथी का चयन कोई हल्की बात नहीं है जिसे जल्दबाज़ी में किया जाए।

बाइबल हमें यह सिखाती है कि हमें ऐसे व्यक्ति को चुनना चाहिए जो हमारे समान विश्वास और मूल्य रखता हो, और जिसे हम जीवन-भर का साथी मान सकें।

आज प्रेम के अनेक दृष्टिकोण हैं जो आसानी से हमें भ्रमित कर सकते हैं, परन्तु विवाह के विषय में परमेश्वर का उद्देश्य स्पष्ट और स्थिर है। उसकी योजना पर भरोसा रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, परन्तु यह हमेशा हमें ऐसे व्यक्ति की ओर ले जाती है जो हमारा आदर करता है और हमें विश्वास में बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

# 1

## बाइबल एक धर्मी जीवनसाथी के विषय में क्या कहती है?

मुख्य वचन: 2 कुरिन्थियों 6:14

*“अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो. . .”*

जीवनसाथी चुनना किसी भी व्यक्ति के जीवन को बदलने वाले सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है। आजकल संबंध भावनाओं, समान रुचियों और आकर्षण पर आधारित होते हैं। हालाँकि, परमेश्वर का उद्देश्य हमसे कहीं गहरा है। एक धार्मिकता भरा विवाह केवल उस व्यक्ति को ढूँढ़ना माल नहीं है जिसे हम प्रेम करते हैं, बल्कि उस व्यक्ति को खोजना है जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है, विश्वास से चलता है, आपका साथ देता है और आत्मिक रूप से आपको बढ़ने में सहायता करता है।

2 कुरिन्थियों 6:14 चेतावनी देता है, ‘अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो।’ यद्यपि यह अनेक संबंधों पर लागू होती है, परन्तु विवाह में साझा विश्वास के महत्व को यह विशेष रूप से दृढ़ करती है। जब दो व्यक्ति एक ही विश्वास और परमेश्वर के प्रति एक समान समर्पण रखते हैं, तो संबंध और अधिक बेहतर होता है। ऐसे संबंध भावनाओं से अधिक सामर्थी रूप से दृढ़ होते हैं: एक ऐसा प्रेमपूर्ण बंधन जो सब कुछ से परे होता है।

तो, एक धर्मी जीवनसाथी कैसा होता है? क्या हम पहचान सकते हैं कि कौन-से गुण ऐसे साथी में होते हैं जो प्रभु का आदर करता है? बाइबल हमें यह दिशा और समझ देती है कि परमेश्वर के अनुसार जीवनसाथी का चयन कैसे किया जाए और ऐसा संबंध कैसे विकसित किया जाए जो परमेश्वर के विवाह-संबंधी उद्देश्य का आदर करे।

### एक धर्मी जीवनसाथी मसीह को प्रथम स्थान देता है

एक धर्मी जीवनसाथी का सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि वह अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर से प्रेम करता है—बाकी सब कुछ इसके बाद आता है। इसका अर्थ यह है कि उसका विश्वास केवल बोलने भर की बात नहीं है—बल्कि उसका दैनिक जीवन उसी विश्वास से संचालित होता है। वे परमेश्वर द्वारा निर्देशित होते हैं, नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, और उसके निर्देशों का पालन करने का पूर्ण प्रयास करते हैं।

यह बात मत्ती 6:33 में स्पष्ट रूप से कही गई है, “इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।” जो जीवनसाथी परमेश्वर से प्रेम करता है और उसे अपने दैनिक जीवन में प्राथमिकता देता है, वह निस्संदेह इस बात को अपने विवाह में भी लाएगा।

मसीह पर आधारित संबंध का अर्थ है कि दोनों जीवनसाथी एक-दूसरे पर नहीं, बल्कि मसीह पर निर्भर रहते हैं। विश्वास ही वह चीज है जो विपरीत परिस्थितियों में भी विवाह को एक साथ जोड़े रखता है। विश्वास पर आधारित जोड़े बड़े धैर्य और उससे भी बढ़कर, बुद्धिमानी से समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

### एक धर्मी जीवनसाथी मसीह के समान प्रेम दिखाता है

लोग प्रेम को केवल एक भावना मानते हैं। हालाँकि, बाइबल प्रेम को एक कार्य के रूप में प्रस्तुत करती है। एक धर्मी जीवनसाथी उसी प्रकार प्रेम करता है जैसे मसीह करता है। इसका अर्थ है कि वह धैर्यवान, दयालु और निस्वार्थ है।

1 कुरिन्थियों 13:4-7 न केवल प्रेम का वर्णन करता है बल्कि ईश्वरीय प्रेम का एक दृश्य भी प्रस्तुत करता है, जिसमें कहा गया है, “प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।”

एक धर्मी जीवनसाथी सिद्ध नहीं होता है, परन्तु मसीह के चरित्र को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास करता है। इसमें अच्छे समय में केवल स्नेही और दयालु होना ही शामिल नहीं है; इसमें कठिन समय में क्षमाशील, धैर्यवान और प्रतिबद्ध होना भी शामिल है।

### एक धर्मी जीवनसाथी पवित्रता का अनुसरण करता है

आज के समय में अस्थायी संबंध और क्षणिक जुड़ाव बहुत सामान्य हैं, परन्तु परमेश्वर हमें अपने कार्यों और हृदयों दोनों में पवित्र होने के लिए बुलाता है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

1 थिस्सलुनीकियों 4:3-4 कहता है, “क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो: अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने।”

शारीरिक पाप से बचना ही पवित्रता के लिए प्रयास करने का एकमात्र तरीका नहीं है; पवित्रता के लिए हृदय और इच्छा का होना भी महत्वपूर्ण है। परमेश्वर का जीवनसाथी सीमाओं का आदर करता है, पवित्रता की खोज करता है और अपने साथी को अपने संबंध में इस प्रकार से सहायता करता है जो परमेश्वर का आदर करे। वह जानता है कि प्रेम उन्हें परीक्षा में नहीं डालता है, बल्कि उनके संबंध को आदर देता है और ऐसी किसी भी चीज़ से बचाता है जो उनके विश्वास को नुकसान पहुँचा सकती है।

### एक धर्मी जीवनसाथी नम्र और सीखने योग्य होता है

एक स्वस्थ संबंध के लिए नम्रता आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति सिद्ध नहीं होता है, और विवाह दो ऐसे व्यक्तियों का मिलन है जो एक साथ मिलकर सीखने, आगे बढ़ने और अपनी गलतियों को पहचानने का प्रयास करते हैं।

नीतिवचन 15:33 कहता है, “यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त होती है, और महिमा से पहले नम्रता आती है।” एक धर्मी जीवनसाथी स्वयं को सुधार से ऊपर नहीं समझता है, बल्कि इसके बजाय परमेश्वर की बुद्धि और मार्गदर्शन की खोज करता है। वह आगे बढ़ सकता है, क्षमा माँग सकता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात, क्षमा कर सकता है।

नम्रता संबंधों को मजबूत करती है, जबकि अहंकार उन्हें तोड़ देता है। एक जीवनसाथी धार्मिकता से जीवन जीता है, वह समझता है कि प्रेम का अर्थ किसी बहस को जीतना या कोई बात साबित करना नहीं है। यह सेवा करना, त्याग करना और दूसरों को प्राथमिकता देना है।

### एक धर्मी जीवनसाथी आत्मिक बढ़ोतरी के लिए प्रेरित करता है

एक पवित्र विवाह में आनन्द और खुशी दोनों शामिल हैं। आपके साथी को आपको ऊँचा उठाना चाहिए और जीवन के सभी पहलुओं में मसीह के द्वारा बेहतर बनने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

बाइबल में इब्रानियों 10:24 कहता है, “और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें।”

एक जीवनसाथी आपके प्रार्थना जीवन में सहायक होता है, आपके विश्वास का समर्थन करता है, और आपको परमेश्वर में स्थिर रहने में सहायता करता है। वह प्रेमपूर्वक आपको चुनौती देता है, परन्तु ऐसा वह आपको मसीह के और भी निकट लाने के उद्देश्य से करता है।

## एक धर्मी जीवनसाथी को पाना

दोनों साथी विश्वास से भरे विवाह में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में एक-दूसरे की सहायता करते हैं। वे कलीसिया में एक साथ जाते हैं, बाइबल पढ़ते हैं, एक साथ अध्ययन करते हैं, और एक-दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

### एक धर्मी जीवनसाथी दयालु और कोमल होता है

कठिन समय में एक व्यक्ति दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है, यह उसके असली चरित्र को दर्शाता है। एक धर्मी जीवनसाथी नाराज़ होने पर भी दयालुता का ही चुनाव करता है। जैसा कि इफिसियों 4:2 कहता है, "सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।" इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति निराश, परेशान या क्रोधित नहीं होगा, बल्कि यह इस बात को दिखाता है कि वह किस प्रकार अनुग्रह के साथ संघर्ष का सामना करता है।

वह किसी मुद्दे पर क्रोध से प्रतिक्रिया देने के बजाय उसका समाधान ढूँढने पर ध्यान केन्द्रित करता है। अतीत के अनुभवों को पकड़े रहने के बजाय क्षमा करना चुनता है। एक धर्मी जीवनसाथी घमंड के स्थान पर शान्ति को और नाराजगी के स्थान पर क्षमा को प्राथमिकता देता है।

### एक धर्मी जीवनसाथी विश्वासयोग्य और भरोसेमंद होता है

विश्वास के बिना कोई भी संबंध टिक नहीं सकता है। हाँ, इसे पाना कठिन हो सकता है, परन्तु यह अमूल्य है। एक धर्मी जीवनसाथी ईमानदारी, विश्वासयोग्य और समर्पण लाएगा। भरोसेमंद का अर्थ है कि उनके शब्द खोखले नहीं हैं, और वे जैसा कहते हैं वैसा ही करते हैं। नीतिवचन 12:22 कहता है, "झूठों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।"

विश्वासयोग्य होना प्रतिबद्ध रहने से कहीं अधिक है; इसका अर्थ जीवन के सभी पहलुओं में भरोसेमंद होना भी है। यह कहना कि आप वहाँ होंगे, वास्तव में वहाँ होने से अलग है। धर्मी जीवनसाथी घर का प्रबन्ध करते हैं, निरंतर प्रेम करते हैं, सक्रिय रूप से कार्य करते हैं, और परमेश्वर व अपने जीवनसाथी के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं में विश्वासयोग्य होते हैं।

### विवाह के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को समझना

विवाह केवल प्रेम, विश्वास और संगति के बारे में नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर द्वारा स्थापित एक वाचा है। आज के संसार में संबंध व्यक्तिगत पसंद पर आधारित हैं। संबंधों के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण के विपरीत, बाइबल आधारित विवाह का मूल्य अधिक होता है, जो हमें परमेश्वर के सत्य को समझने में सक्षम बनाता है। यह परमेश्वर के स्नेह, विश्वासयोग्यता और एकताकी उसकी इच्छा को दर्शाता है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जब दो लोग विवाह का निर्णय लेते हैं, वे केवल अपने जीवन का नया अध्याय आरम्भ नहीं करते हैं, बल्कि एक ईश्वरीय बुलाहट में प्रवेश करते हैं। परमेश्वर की विवाह-के-प्रति-योजना में केवल आनन्द नहीं है, बल्कि पवित्रता भी शामिल है। इसमें परस्पर परिवर्तन, विश्वास में बढ़ना, और ऐसा जीवन बनाना शामिल है जो परमेश्वर को प्रसन्न करे।

**विवाह केवल एक प्रतिबद्धता नहीं, बल्कि एक वाचा है**

कई लोग विवाह को एक अनुबंध—एक प्रेमपूर्ण समझौता—मानते हैं जिसमें दो लोग एक-दूसरे का साथ देने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। किन्तु बाइबल में, विवाह का अर्थ इससे कहीं आगे तक जाता है। यह एक वाचा है, विश्वास का एक पवित्र बंधन जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के संबंध को दर्शाता है।

जैसा कि इफिसियों 5:31-32 कहता है, “इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है, पर मैं यहाँ मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।” तो फिर, विवाह केवल एक पारस्परिक प्रतिज्ञा नहीं है —यह परमेश्वर की अपने लोगों के साथ की गई अनन्त वाचा का प्रतिबिम्ब है।

वाचा के विपरीत, अनुबंध की परिस्थितियों के आधार पर अलग-अलग परिभाषाएँ हो सकती हैं। एक वाचा में एक अटूट बंधन शामिल होता है, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, “मैं आपके प्रति वफादार रहने का वायदा करता हूँ;” दूसरी ओर, एक अनुबंध सहमत शर्तों पर आधारित होता है जिसमें सेवाओं के बदले प्रतिफल शामिल होते हैं, जैसे, “यदि तुम मेरी सहायता करो, तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।”

समर्पण, भक्ति, और प्रेम, विवाह के वे गुण हैं जिनकी कल्पना परमेश्वर ने एक ऐसी वाचा के रूप में की थी जो समय के साथ स्थायी रहेगी। इसका अर्थ है कि बदलती भावनाओं और परिस्थितियों के आगे झुकने के बजाय, हम जीवन की हर बाधा को पार करने का प्रयास करते हुए प्रतिबद्धता का आदर करते हैं, जैसे परमेश्वर हमारे साथ खड़ा होता है।

**विवाह मसीह के कलीसिया के प्रति प्रेम का प्रतिबिम्ब है**

पवित्रशास्त्र में विवाह का चित्रण इफिसियों 5:25 में मिलता है, जहाँ लिखा है, “हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।”

यह दिखाता है कि विवाह अपने आप में केवल एक अंत नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी यात्रा है जो संपूर्ण, गहरे, त्यागपूर्ण प्रेम से भरी है। जैसे मसीह अपनी कलीसिया से प्रेम करता है, ठीक वैसे ही पति-पत्नी को एक-दूसरे से और भी अधिक चैर्य और कोमलता से प्रेम करना चाहिए।

### **विवाह में जीवनसाथी की जिम्मेदारियाँ**

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों को विशिष्ट उत्तरदायित्वों के साथ बनाया है, जो भिन्न होने पर भी विवाह में एक-दूसरे के पूरक हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि एक किसी दूसरे से अधिक मूल्यवान है। बल्कि यह कि दोनों के पास भिन्न तरह की सामर्थ्य हैं, जो मिलकर परमेश्वर के एक महान उद्देश्य को पूरा करते हैं।

### **पति की भूमिका**

विवाह में, बाइबल पुरुषों को आत्मिक अगुवाई की भूमिका निभाने के लिए बुलाती है। इसका अर्थ शासन या अधिकार जमाना नहीं है, बल्कि प्रेम, ज्ञान, और नम्रता के साथ अगुवाई करना है।

इफिसियों 5:23 में लिखा है, “*क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है,*” इस वचन का अर्थ पत्नी पर प्रभुत्व जमाना नहीं है, बल्कि मसीह के समान उदाहरण देकर अपने परिवार की अगुवाई करना है। एक जिम्मेदार पुरुष यीशु मसीह के उदाहरण का अनुसरण करता है, अपनी पत्नी और परिवार के लिए आदर्श स्थापित करता है। वह कोमलता और दया से अपने विवाह को पोषित करता है, अपने परिवार की देखभाल करता है और उनकी रक्षा करता है।

### **पत्नी की भूमिका**

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया और स्त्रियों को अपने पतियों की सहायक और साथी की भूमिका सौंपी। इससे स्त्रियों को पुरुषों के समान शक्ति और प्रभाव प्राप्त होता है और यह किसी भी तरह से कमजोरी का प्रतीक नहीं है।

नीतिवचन 31:10-11 कहता है, “*भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मुँगों से भी बहुत अधिक है। उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है, और उसे लाभ की घटी नहीं होती।*”

परमेश्वर की स्त्री अपने पति के साथ खड़ी रहती है और प्रेम व विश्वास का घर बनाने में उसकी सहायता करती है। वह बुद्धि, अनुग्रह, और सामर्थ्य का प्रदर्शन करती है ताकि मिलकर ऐसा जीवन बना सके जो परमेश्वर की महिमा करे।

### **विवाह एकता के बारे में है**

विवाह एक सतही-संबंध से कहीं अधिक है; यह हृदय और आत्मा की एकता है, विश्वास और विकास की एक साझा यात्रा है।

उत्पत्ति 2:24 कहता है, “*इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।*”

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

विवाह एक ऐसा बंधन है जो सतही संबंध से कहीं बढ़कर होता है। यह हृदय, मन और आत्मा की एकता है। यह जीवन को हाथ में हाथ डालकर जीने, एक दूसरे की सहायता करने और एक साथ विश्वास में परिपक्व होने के बारे में है।

यह एकता प्रयास माँगती है। इसमें नम्रता, क्षमा, और धैर्य आवश्यक हैं। इसका अर्थ कठिन समय में प्रेम करने का निर्णय लेना है और कठिनाइयों के समय साथ खड़े रहना है। एक धार्मिकता से भरा विवाह दो पूर्ण लोगों पर केंद्रित नहीं होता है। यह दो अपूर्ण लोगों के बारे में होता है जो अपने बंधन की मज़बूती के लिए परमेश्वर पर निर्भर होते हैं।

### **विवाह विकास की एक यात्रा है**

बहुत से लोग सोचते हैं कि सही व्यक्ति मिल जाने के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। हालाँकि विवाह किसी पूर्ण व्यक्ति को पाने के बारे में नहीं है, बल्कि साथ मिलकर बढ़ने और सीखने की यात्रा है।

सभोपदेशक 4:9-10 कहता है, “एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा।”

वैवाहिक जीवन गहरे प्रेम और सच्ची क्षमा पर आधारित होना चाहिए। एक मसीही विवाह में, हमें अपने जीवनसाथी को निखारने और उनसे सीखने के लिए कहा जाता है, और साथ ही, स्वयं भी इस यात्रा पर रहते हुए उन्हें बेहतर व्यक्ति बनने में सहायता करनी चाहिए। हर एक गहरे संबंध में बसे व्यक्ति को खुश करने के बजाय, उसे और भी पवित्र बनने में सहायता करनी चाहिए।

विवाह हमें अनुग्रह, नम्रता और धैर्य सिखाता है। यद्यपि यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है, परन्तु मसीह की सहायता से दंपति समय के साथ और अधिक मज़बूत बनते चले जाते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम सही नज़रिए से देखें और समझें कि उसने हमारे लिए क्या इरादा किया है।

### **चर्चा: एक धर्मी जीवनसाथी के कौन से गुण होते हैं?**

विवाह आपके जीवन के सबसे बड़े फैसलों में से एक है, और जीवनसाथी चुनना भी। एक धर्मी जीवनसाथी केवल वह व्यक्ति नहीं है जो आनन्द लाता है, बल्कि वह ऐसा व्यक्ति है जो आपको मसीह में बढ़ने में सहायता करेगा।

जीवनसाथी में कौन से गुण देखने चाहिए?

- **विश्वास** - क्या वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं? क्या उनका जीवन मसीह में आधारित है?

## एक धर्मी जीवनसाथी को पाना

- **चरित्र** - क्या वे ईमानदार, दयालु, भरोसेमंद और दूसरे लोगों के प्रति आदरपूर्ण हैं?
- **नम्रता** - क्या वे अपनी भूल स्वीकार करने और परमेश्वर से सहायता माँगने के लिए तैयार हैं?
- **समर्पण** - क्या वे आत्म-सुधार, सीखने और एक स्वस्थ, दीर्घकालिक विवाह के निर्माण के लिए समर्पित हैं?
- **धैर्य और क्षमा** - क्या वे संघर्षों को अनुग्रह से संभाल सकते हैं और प्रेम को अहंकार से ऊपर रख सकते हैं?

“सही साथी ढूँढ़ने पर ध्यान केंद्रित करने से पहले, अपने आप से पूछें: क्या मैं सही व्यक्ति बन रहा हूँ? बहुत से लोग धर्मी जीवनसाथी की तलाश करते हैं, परन्तु अपनी आत्मिक और व्यक्तिगत उन्नति को अनदेखा कर देते हैं। एक मज़बूत संबंध की शुरुआत एक मज़बूत व्यक्ति से होती है, जो मसीह-केंद्रित संगति के लिए तैयार है।”

एक स्थायी विवाह के लिए संभावनाओं पर निर्भर रहने के बजाय रणनीतिक योजना बनाना ज़रूरी है। यह विश्वास, चरित्र और प्रतिबद्धता के मज़बूत ढाँचे के बिना संभव नहीं है। जीवनसाथी से मिलने से पहले इन सभी पहलुओं पर ध्यान देना ज़रूरी है।

विवाह किसी को प्रेम करने के लिए ढूँढ़ने से कहीं अधिक है। यह परमेश्वर की सेवा करते हुए अपना जीवन समर्पित करने के लिए किसी को खोजने के बारे में है। जब परमेश्वर को संबंध के केंद्र में रखा जाता है, तो आपका प्रेम समय के साथ बढ़ता जाता है।

## 2

# एक धर्मी संबंध के लिए स्वयं को तैयार करना

किसी और पर ध्यान देने से पहले स्वयं से सही प्रश्न पूछना आवश्यक है: क्या मैं सही व्यक्ति बन रहा हूँ? अक्सर हम जीवनसाथी की खोज में अपने आप पर ध्यान देना भूल जाते हैं। इसलिए, यह प्रश्न इसलिए है ताकि वे उत्तर दे सकें कि क्या वे परमेश्वर का आदर करने वाले संबंध के लिए तैयार हैं।

एक स्थायी विवाह के लिए संभावनाओं पर निर्भर रहने के बजाय रणनीतिक योजना बनाना ज़रूरी है। यह विश्वास, चरित्र और प्रतिबद्धता के मज़बूत ढाँचे के बिना संभव नहीं है। विश्वास, चरित्र और प्रतिबद्धता जैसे गुणों को जीवनसाथी चुनने से पहले विकसित किया जाना चाहिए।

**परमेश्वर के साथ संबंध सबसे पहले आता है**

यदि कोई जन एक स्वस्थ धर्मी संबंध की अपेक्षा रखता है तो उसे परमेश्वर के साथ अपने संबंध को तुरन्त प्राथमिकता देनी होगी। बाइबल सिखाती है कि हमारी पहचान, उद्देश्य और पूर्ति मसीह में पाई जाती है, न कि हमारे जीवनसाथी या किसी अन्य व्यक्ति में।

यदि हम किसी जीवनसाथी से अपनी सारी आत्मिक और भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति की अपेक्षा करते हैं, तो यह अव्यावहारिक है और निराशा लाता है। स्वयं के साथ सहज रहना परमेश्वर द्वारा दिया गया एक उपहार है, जो प्रेम को सक्षम बनाता है। उसके अनुग्रह के बिना, कोई भी व्यक्ति इस भूमिका को नहीं निभा पाएगा।

मती 6:33 हमें स्मरण दिलाता है, “इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।” यदि हम परमेश्वर को प्रथम स्थान पर रखेंगे, तो वह हमारी हर आवश्यकता पूरी करेगा—जिसमें सही समय पर सही संबंध भी शामिल है।

एक मजबूत विवाह दो अधूरे लोगों के बारे में नहीं है जो एक दूसरे के खालीपन को भरने का प्रयास कर रहे हैं, बल्कि यह दो व्यक्तियों के बारे में है जो मसीह में अपनी पूर्णता पाते हैं और उसका आदर करने के लिए एक साथ आते हैं।

### **चरित्र समानता से अधिक महत्वपूर्ण है**

जब लोग संबंधों के बारे में सोचते हैं, तो वे अक्सर समानता पर ध्यान केंद्रित करते हैं —समान रुचियाँ, समान व्यक्तित्व, या समान जीवन लक्ष्य। किन्तु बाइबल सिखाती है कि चरित्र, समानता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

नीतिवचन 31:10 कहता है, “भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मुँगों से भी बहुत अधिक है।” यह वचन चरित्र के वास्तविक मूल्य को दर्शाता है। यह इस बारे में नहीं है कि कोई कितना आकर्षक या मनमोहक है—यह इस बारे में है कि उनके हृदय में कितनी खराई और विश्वास है।

केवल यह पूछने के बजाय कि, 'मैं किस प्रकार के व्यक्ति से विवाह करना चाहता हूँ?' बेहतर प्रश्न यह है कि, 'मैं किस प्रकार का व्यक्ति बन रहा हूँ?'

- क्या आप धैर्यवान और दयालु हैं?
- क्या आप नम्रता और क्षमा का अभ्यास करते हैं?
- क्या आप ईमानदार और भरोसेमंद हैं?
- क्या आप दूसरों की सेवा करने का प्रयास करते हैं, बजाय इसके कि आप सेवा पाने की उम्मीद करें?

आपका चरित्र ही आपके संबंधों को आकार देता है। यदि आप एक मजबूत, धार्मिकता से भरा विवाह चाहते हैं, तो पहले एक मजबूत और धर्मी हृदय विकसित करें।

### **भावनात्मक और आत्मिक परिपक्वता**

बहुत से लोग विवाह की इच्छा रखते हैं, परन्तु हर कोई उस जिम्मेदारी के लिए तैयार नहीं होता है जो इसके साथ आती है। एक स्वस्थ संबंध के लिए भावनात्मक और आत्मिक परिपक्वता आवश्यक है। यह केवल प्रेम के बारे में नहीं है—यह चुनौतियों, असहमति, और त्यागों को अनुग्रह के साथ संभालने की क्षमता के बारे में है।

विवाह आपके सर्वश्रेष्ठ और सबसे खराब पक्ष दोनों को सामने लाएगा। यह आपकी ताकतें प्रकट करेगा, परन्तु यह आपकी कमजोरियों को भी उजागर करेगा। इसलिए किसी संबंध में प्रवेश करने से पहले अपने व्यक्तिगत विकास पर काम करना महत्वपूर्ण है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

- अपनी भावनाओं को अपने ऊपर हावी न होने दें; उन्हें नियंत्रित करना सीखें।
- निराशा में प्रतिक्रिया देने के बजाय बुद्धि के साथ संघर्ष को संभालने का अभ्यास करें।
- धैर्य का विकास करें, क्योंकि विवाह में बहुत धैर्य की आवश्यकता होगी।
- एक दृढ़ प्रार्थना जीवन विकसित करें क्योंकि प्रार्थना पर केंद्रित विवाह एक ऐसा विवाह है जो टिकाऊ होता है।

यदि आप असुरक्षा, भय या अतीत के जख्मों से जूझ रहे हैं, तो किसी संबंध में कदम रखने से पहले उसे ठीक होने के लिए समय निकालें। यह अपेक्षा करना अनुचित है कि कोई दूसरा व्यक्ति उस समस्या को ठीक कर देगा जिसे केवल परमेश्वर ही ठीक कर सकता है।

### **विवाह से पहले अपने उद्देश्य को समझना**

एक धार्मिकता से भरा विवाह केवल संगति के बारे में नहीं है—यह उद्देश्य के बारे में होता है। आपका जीवनसाथी आपका उद्देश्य नहीं होना चाहिए; बल्कि वह उस उद्देश्य को पूरा करने में आपका साथी होना चाहिए जिसे परमेश्वर ने पहले ही आपके जीवन में रखा है।

पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 7:32-34 में याद दिलाता है कि अविवाहित रहना एक ऐसा समय होता है जिसमें हम पूरी तरह से परमेश्वर की सेवा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। अविवाहित रहने को जल्द से जल्द "खत्म" करने वाली चीज़ के रूप में देखने के बजाय, इसे बढ़ने, सेवा करने और तैयारी करने के समय के रूप में देखा जाना चाहिए।

जीवनसाथी की तलाश करने से पहले अपने आप से पूछें:

- क्या मैं अपने परमेश्वर द्वारा प्रदान उद्देश्य में चल रहा हूँ?
- क्या मैं ऐसा जीवन जी रहा हूँ जो परमेश्वर का आदर करता है, चाहे मैं अकेला हूँ या किसी संबंध में हूँ?
- क्या मुझे इस बात का स्पष्ट ज्ञान है कि मैं अपना भविष्य कैसा देखना चाहता हूँ?

विवाह जीवन को रोमांचक बनाने के लिए किसी को ढूँढ़ने का माध्यम नहीं है — यह दो लोगों के बारे में है जो एक टीम के रूप में एक साथ मिलकर परमेश्वर की सेवा व्यक्तिगत रूप से करने की अपेक्षा बेहतर ढंग से करते हैं, और यहाँ तक कि बच्चों के आनन्द में भी उद्देश्य ढूँढ़ते हैं।

### **संबंधों में धर्मी मानक स्थापित करना**

संबंधों में लोग जो सबसे बड़ी गलती करते हैं, वह है डर के कारण अपने स्तर को गिरा देना — अकेले रह जाने का डर, कुछ खो जाने का डर, या यह डर कि कोई और उनके साथ नहीं आएगा।

## एक धर्मी जीवनसाथी को पाना

किन्तु परमेश्वर के सर्वोत्तम से कम पर समझौता हमेशा हृदय-वेदना लाएगा। सही व्यक्ति का इंतज़ार करना जल्दबाज़ी में संबंध में उतरने से बेहतर है जो आपको आपके विश्वास से दूर खींचे।

2 कुरिन्थियों 6:14 चेतावनी देता है, “*अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो।*” इसका अर्थ उन लोगों को अस्वीकार करना नहीं है जो आपके विश्वास से असहमत हैं, बल्कि अपने हृदय और अपने भविष्य की सुरक्षा करना है।

एक धर्मी संबंध आपको आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, न कि परमेश्वर से दूर खींचना चाहिए। यदि किसी के साथ रहने के लिए आपको अपने विश्वास, अपने मूल्य, या अपने परमेश्वर के साथ संबंध के साथ समझौता करना पड़ता है, तो वह संबंध उसकी इच्छा के अनुरूप नहीं है।

### **परमेश्वर के समय का इंतज़ार करना**

कई लोग जल्दी से संबंध ढूँढ़ने का दबाव महसूस करते हैं, विशेषकर जब वे दूसरों को विवाह करते हुए देखते हैं। किन्तु अधीरता में किसी संबंध में कूदना पीड़ा और पछतावे का कारण बन सकता है।

परमेश्वर का समय हमेशा सिद्ध होता है। उसकी योजना हमारी बनाई किसी भी चीज़ से बेहतर है। भजन संहिता 27:14 कहती है, “*यहोवा की बात जोहता रह; हियाव बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे।*”

परमेश्वर की प्रतीक्षा करने का अर्थ यह नहीं है कि हम कुछ न करते हुए बैठे रहें। इसका अर्थ है सक्रिय रूप से बढ़ना, सेवा करना, तथा वह व्यक्ति बनना जिसे बनने के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है। इसका अर्थ यह भरोसा करना है कि परमेश्वर आपको और आपके भावी जीवनसाथी को सही समय के लिए तैयार कर रहा है।

यह सोचने के बजाय कि आप कब सही व्यक्ति से मिलेंगे, अपने आप को सही व्यक्ति बनाने पर ध्यान दें।

### **विश्वास, चरित्र, और भावनात्मक परिपक्वता में बढ़ना**

एक दृढ़, धर्मी संबंध केवल प्रेम और आकर्षण पर आधारित नहीं होता है। यह विश्वास, चरित्र और भावनात्मक परिपक्वता पर आधारित है। किसी संबंध में कदम रखने से पहले, इन क्षेत्रों में प्रगति करना महत्वपूर्ण है—न केवल जीवनसाथी खोजने के लिए, बल्कि इसलिए भी कि ये आपको मसीह के अनुयायी के रूप में आकार देते हैं।

### **विश्वास: अपना जीवन सबसे पहले परमेश्वर पर आधारित करें**

एक धर्मी संबंध परमेश्वर के साथ एक दृढ़ संबंध से आरम्भ होता है। यदि आपका विश्वास कमजोर है, तो कोई भी संबंध पूर्ण रूप से सुरक्षित महसूस नहीं लगेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग आपको निराश कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर कभी नहीं करेगा।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

आपका विश्वास आपके जीवन की नींव होना चाहिए, न कि कोई ऐसी चीज़ जिसे आप बाद में जोड़ते हैं। यदि आप खुशी, शान्ति और सुरक्षा पाने के लिए किसी व्यक्ति पर पूरी तरह निर्भर हैं, तो आप स्वयं को निराशा के लिए तैयार कर रहे हैं। कोई भी व्यक्ति आपको वह नहीं दे सकता, जिसे केवल परमेश्वर ही दे सकता है।

मत्ती 7:24-25 हमें याद दिलाता है, “इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।”

परमेश्वर के साथ एक दृढ़ संबंध अपने घर को चट्टान पर बनाने के समान है। जब जीवन संघर्ष लाता है, तो आपका विश्वास आपको स्थिर रखेगा। किन्तु यदि आपका विश्वास कमजोर है, तो आप हमेशा अपने आस-पास जो होता है उससे हिलते रहेंगे।

विश्वास में बढ़ने का अर्थ यह नहीं है कि आपको सिद्ध होना है। इसका अर्थ यह है कि आप प्रतिदिन परमेश्वर की खोज करें, उसके वचन पढ़ें, और अपने भविष्य के लिए उस पर भरोसा रखें। किसी संबंध में प्रवेश करने से पहले स्वयं से पूछें:

- क्या मेरा विश्वास चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत है?
- क्या मैं परमेश्वर को अपनी प्राथमिकता बना रहा हूँ, या मैं किसी और को यह भूमिका देने का प्रयास कर रहा हूँ?
- क्या मैं परमेश्वर के समय पर भरोसा करता हूँ, या मैं भय में किसी चीज़ में जल्दबाज़ी कर रहा हूँ?

### चरित्र: सही व्यक्ति बनना

बहुत से लोग सही व्यक्ति को खोजने पर ध्यान देते हैं, परन्तु वे स्वयं सही व्यक्ति बनने पर विचार नहीं करते हैं। एक धर्मी संबंध मज़बूत चरित्र पर आधारित होता है—अर्थात् खराई, दया, विनम्रता और धैर्य।

नीतिवचन 10:9 कहता है, “जो खराई से चलता है वह निडर चलता है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी चाल प्रगट हो जाती है।” आपका चरित्र इस बात को आकार देता है कि आप संबंधों को कैसे संभालते हैं। यदि आप अभी ईमानदारी, भरोसे, या धैर्य में संघर्ष करते हैं, तो वे संघर्ष संबंध में प्रवेश करते ही गायब नहीं होंगे—वे और स्पष्ट हो जाएँगे।

यह पूछने के बजाय “मैं किस प्रकार के व्यक्ति के साथ रहना चाहता हूँ?” यह पूछें, “मैं किस प्रकार का व्यक्ति बन रहा हूँ?”

क्या आप भरोसेमंद हैं? क्या आप दूसरों के साथ आदर से पेश आते हैं? क्या आप धैर्य और आत्म-संयम में बढ़ रहे हैं? आप अभी जैसे व्यक्ति हैं, वही आपके भविष्य के संबंध को आकार देगा।

**भावनात्मक परिपक्वता: संबंधों को बुद्धिमानी से संभालना**

भावनात्मक परिपक्वता एक स्वस्थ संबंध के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ अपनी भावनाओं को संभालना सीखना, अच्छी तरह संवाद करना, और चुनौतियों का सामना बिना भय या क्रोध से प्रतिक्रिया दिए करना है।

बहुत से संबंध प्रेम की कमी के कारण नहीं टूटते हैं, परन्तु भावनात्मक परिपक्वता की कमी के कारण टूट जाते हैं। यदि आप ईर्ष्या, असुरक्षा, या नियंत्रित करने वाले स्वभाव में संघर्ष करते हैं, तो एक संबंध इन्हें ठीक नहीं करेगा—यह इन्हें और प्रकट करेगा।

भावनात्मक परिपक्वता में बढ़ने के कुछ तरीके:

- **बिना आवेग में आए भावनाओं को नियंत्रित करना सीखें।** हताश होकर कोई कदम उठाने के बजाय, पहले प्रार्थना करने और बुद्धि प्राप्त करने के लिए समय निकालें।
- **विवाद को अनुग्रह के साथ संभालें।** मतभेद होना सामान्य बात है, परन्तु आपकी प्रतिक्रिया मायने रखती है। क्या आप सुनते हैं या चुप हो जाते हैं? क्या आप शान्ति खोजते हैं या क्रोध को हावी होने देते हैं?
- **अपने व्यक्तिगत विकास की जिम्मेदारी लें।** यदि आपको लगता है कि आपको कुछ क्षेत्रों में सुधार की ज़रूरत है, तो उन्हें अनदेखा न करें। संबंध में प्रवेश करने से पहले उन पर कार्य करें।

**धर्मी संबंध की आदतें विकसित करना**

एक धर्मी संबंध केवल आकर्षण पर आधारित नहीं होता है —यह आदतों और चुनावों पर आधारित होता है। आप अब संबंधों को जिस तरह से देखते हैं, उसका प्रभाव भविष्य में आपके द्वारा बनाए जाने वाले विवाह पर पड़ेगा।

कुछ धर्मी आदतें जिन्हें अभी विकसित करना चाहिए:

- **अपने भविष्य के जीवनसाथी के लिए प्रार्थना करना।** चाहे आप उन्हें जानते हों या नहीं, परमेश्वर से मांगें कि वह आप दोनों को एक मजबूत, मसीह-केंद्रित विवाह के लिए तैयार करे।
- **धैर्य का अभ्यास करना।** भय या दबाव में जल्दी-जल्दी संबंध में कूदना गलतियों की ओर ले जाता है। परमेश्वर के समय पर भरोसा रखें।
- **स्वस्थ सीमाएँ स्थापित करना।** आदर, ईमानदारी, और आत्म-संयम किसी भी संबंध के महत्वपूर्ण हैं।
- **दूसरों की सेवा करना सीखना।** एक मजबूत संबंध वह नहीं है, जिसे आप चाहते हैं —यह निःस्वार्थ भाव से एक दूसरे की सेवा करने और प्रेम करने के बारे में है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

विश्वास, चरित्र, और भावनात्मक परिपक्वता पर आधारित संबंध ही टिकते हैं। सही व्यक्ति को खोजने पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, सही व्यक्ति बनने पर ध्यान केंद्रित करें। जब आप ऐसा करेंगे, तो आप उस प्रकार के प्रेम के लिए तैयार होंगे जो परमेश्वर का आदर करता है।

**चर्चा: आप धर्मी संबंध की आदतें कैसे विकसित कर सकते हैं?**

अपने संबंधों के बारे में सोचें—भूत, वर्तमान और भविष्य। आपको किन क्षेत्रों में विकास करने की आवश्यकता है? क्या ऐसी कोई आदतें हैं जिन्हें आपको बदलने की आवश्यकता है? आज आप स्वयं को ऐसे संबंध के लिए तैयार करने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं जो परमेश्वर को आदर देता है?

विश्वास, चरित्र, और भावनात्मक परिपक्वता में बढ़ना एक दिन में नहीं होता है। यह प्रतिदिन परमेश्वर पर भरोसा करने, समझदारी से चुनाव करने, और वह व्यक्ति बनने की प्रक्रिया है जिसे उसने आपको बनने के लिए बुलाया है। बढ़ते रहें, भरोसा करते रहें, और परमेश्वर को आपके मार्ग की अगुवाई करने दें।

## 3

# विवेक और परमेश्वर की इच्छा को खोजना

संबंधों में परमेश्वर पर भरोसा रखना हमेशा आसान नहीं होता है। जब भावनाएँ शामिल हों, तो विश्वास के बजाय भावनाओं पर भरोसा करना आकर्षक लगता है। हालाँकि, संबंध इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि उन्हें केवल भावनाओं के आधार पर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए बुद्धि, धैर्य और विवेक की आवश्यकता होती है। इसलिए परमेश्वर की इच्छा जानना महत्वपूर्ण है।

### **हमारे समय से ऊपर परमेश्वर का समय**

एक धर्मी संबंध की प्रतीक्षा करने में सबसे कठिन बातों में से एक अनिश्चितता है। आप सोच सकते हैं कि क्या आप कभी सही व्यक्ति से मिलेंगे या फिर आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि क्या आपको चीजें अपने हाथों में ले लेनी चाहिए। किन्तु नीतिवचन 3:5-6 हमें स्मरण दिलाता है, “तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।”

इसका अर्थ परमेश्वर को अपनी इच्छाएँ सौंप देना है, भले ही वह असुविधाजनक लगे। इसका अर्थ यह भरोसा रखना है कि वह आपके लिए सर्वश्रेष्ठ जानता है—भले ही ऐसा लगे कि कुछ नहीं हो रहा है। परमेश्वर का समय न जल्दी और न देर से होता है। वह हमेशा कार्य करता है, भले ही हम उसे नहीं देख पाते हैं।

### **आगे दौड़ने का खतरा**

जब हम अधीर होते हैं, तब समझौते करना आसान हो जाता है। हम अपने मानक गिरा देते हैं, चेतावनी संकेतों को अनदेखा करते हैं, या ऐसे व्यक्ति के साथ समझौता कर लेते हैं जो परमेश्वर की योजना के अनुरूप नहीं है। संसार हमें बताता है कि संबंध में होना ही सबसे ज़रूरी है, परन्तु परमेश्वर की इच्छा से बाहर वाला संबंध आनन्द के बजाय अधिक दुःख दे सकता है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

बाइबल में बहुत से लोगों को परमेश्वर की प्रतीक्षा करने में संघर्ष करना पड़ा। उदाहरण के लिए, अब्राहम और सारा को एक संतान का वादा किया गया था, लेकिन परमेश्वर के समय पर भरोसा करने के बजाय, उन्होंने इस विषय को अपने हाथ में ले लिया। इसका परिणाम वर्षों तक संघर्ष चलता रहा।

हम भी वही गलती करते हैं जब हम भय या अधीरता में संबंधों में जल्दबाज़ी करते हैं। किन्तु परमेश्वर की सर्वोत्तम योजना के लिए इंतज़ार करना उचित है। उसकी योजना हमेशा हमारी अपनी बनाई किसी भी योजना से कहीं बढ़कर होती है।

### संबंधों में बुद्धि को खोजना

विवेक का अर्थ है कि निर्णय लेने से पहले परमेश्वर का मार्गदर्शन खोजें, विशेषकर संबंधों में। यह पूछने के बजाय “क्या यह मेरी इच्छा है?” हमें यह पूछना चाहिए, “क्या यह परमेश्वर की इच्छा है?”

याकूब 1:5 हमें बताता है, “पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।”

परमेश्वर नहीं चाहता है कि आप संबंधों को अकेले ही संभालें। वह अपने वचन, प्रार्थना और बुद्धिमानी भरी सलाह के द्वारा आपको बुद्धि प्रदान करता है। जब भावनाएँ स्पष्ट रूप से देखने में कठिनाई पैदा करती हैं, तो आत्मिक रूप से परिपक्व मार्गदर्शकों या मित्रों से मार्गदर्शन लेने से स्पष्टता लाने में सहायता मिल सकती है।

### स्पष्टता के लिए प्रार्थना करना

प्रार्थना संबंधों में परमेश्वर की इच्छा जानने के सबसे शक्तिशाली तरीकों में से एक है। हम जो चाहते हैं उसके लिए प्रार्थना करने के बजाय, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारी इच्छाओं को उसकी इच्छाओं के साथ मिला दे।

कुछ सहायक प्रार्थनाएँ ये हो सकती हैं:

- हे प्रभु, यदि यह संबंध तेरे द्वारा नहीं है, तो मुझे इससे दूर जाने की सामर्थ्य दे।
- हे परमेश्वर, मुझे अपनी इच्छा के अनुसार प्रतीक्षा करना सिखा, न कि आगे बढ़ने का प्रयास करना।
- हे पिता, मेरे हृदय का मार्गदर्शन कर, ताकि मैं ऐसा संबंध चाहूँ जो सारी बातों से बढ़कर तेरा आदर करे।

जब हम बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर उसे प्रदान करने के लिए विश्वासयोग्य है। वह अपने वचन के माध्यम से, परिस्थितियों के माध्यम से, या यहाँ तक कि हमारे जीवन से कुछ लोगों को हटाकर भी उत्तर दे सकता है।

### **परमेश्वर की योजना पर भरोसा करना**

यह मानना आसान है कि यदि हम नियंत्रण नहीं करेंगे, तो कुछ नहीं होगा। किन्तु परमेश्वर सही समय पर सही व्यक्ति को हमारे जीवन में लाने में पूर्ण रूप से सक्षम है। उसकी योजना कभी देर से पूरी नहीं होती है, और उसके मार्ग हमारे मार्गों से ऊँचे हैं।

यशायाह 55:8-9 कहता है, “क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।”

परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के लिए विश्वास की आवश्यकता है। इसका अर्थ है कि आप इस बात पर भरोसा करें कि वह जानता है कि आपके लिए क्या सर्वोत्तम है, तब भी जब आपको ऐसा लगे कि कुछ भी नहीं हो रहा है। इसका अर्थ यह विश्वास करना है कि उसकी योजना आपके द्वारा स्वयं बनाए गए किसी भी संबंध से बड़ी है।

### **संभावित जीवनसाथी में लाल झण्डियाँ और हरी झण्डियाँ**

जब संबंधों की बात आती है, विशेषकर उन संबंधों की जो विवाह की ओर ले जाते हैं, तो परख अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भावनाओं में बह जाना और उन संकेतों को अनदेखा कर देना आसान होता है जो बताते हैं कि यह संबंध स्वस्थ नहीं है। इसीलिए परमेश्वर की बुद्धि माँगना और किसी सम्भावित साथी में लाल झण्डियाँ व हरी झण्डियाँ, दोनों ध्यान से देखना आवश्यक है।

### **परख क्यों महत्वपूर्ण है**

डेटिंग केवल उस व्यक्ति को खोजने के लिए नहीं है जिसके साथ समय बिताना अच्छा लगे —यह उस व्यक्ति को खोजने के बारे में है जो आपके साथ विश्वास में चले। विवाह आपके द्वारा लिए जाने वाले सबसे बड़े निर्णयों में से एक है, और गलत साथी चुनने से हृदयविदारक पीड़ा हो सकती है, जबकि बुद्धिमानी से चुनाव करने से जीवन भर प्रेम, विकास और मसीह में उद्देश्य प्राप्त हो सकता है।

नीतिवचन 4:23 हमें बताता है, “सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।” इसका अर्थ संबंधों में उद्देश्यपूर्ण और सावधान होना है। इसका अर्थ केवल भावनाओं का पीछा करना नहीं है, परन्तु जीवनसाथी चुनते समय परमेश्वर का मार्गदर्शन पाना और उसकी बुद्धि को खोजना है।

### लाल झण्डियों को पहचानना

लाल झण्डियाँ ऐसे चेतावनी संकेत होते हैं जो बताते हैं कि संबंध में कुछ तो ऐसा है जो सही नहीं है। आरम्भ में ये छोटे लग सकते हैं, परन्तु समय के साथ वे बड़े संघर्षों की ओर ले जाते हैं। यहाँ कुछ सामान्य लाल झण्डियाँ हैं जिन पर ध्यान देना चाहिए:

#### 1. आत्मिक बढ़ोत्तरी का अभाव

परमेश्वर-केंद्रित संबंध आत्मिक बढ़ोत्तरी को बढ़ावा देता है। यदि आपका साथी अपने विश्वास में बढ़ने में रुचि नहीं रखता है या आपके मसीह में चलने का समर्थन नहीं करता है, तो यह चिन्ता का गंभीर विषय है। 2 कुरिन्थियों 6:14 चेतावनी देता है, “*अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो।*” इसका अर्थ यह नहीं है कि आप उनका न्याय करें, परन्तु इसका अर्थ यह है कि आपको आत्मिक रूप से एक ही पृष्ठ पर होना चाहिए।

#### 2. नियंत्रित करने वाला या छलपूर्ण व्यवहार

प्रेम नियंत्रण के बारे में नहीं है। यदि आपका साथी अत्याधिक अधिकार जताता है, आपके लिए निर्णय लेता है, या आपको अपनी इच्छा के अनुसार चलाने का प्रयास करता है, तो यह लाल झण्डि है। स्वस्थ संबंध पारस्परिक सम्मान और विश्वास पर बनते हैं, न कि नियंत्रण पर।

#### 3. दूसरों के प्रति अनादर या बुरा व्यवहार

आपका साथी अपने परिवार, मित्रों, और अजनबियों के साथ कैसा व्यवहार करता है? यदि वह दूसरों के साथ रूखा, उपेक्षापूर्ण या निर्दयी व्यवहार करता है, तो कुछ समय बाद यही व्यवहार आपके संबंध को भी प्रभावित करेगा। सच्चा चरित्र इस बात से प्रकट होता है कि कोई व्यक्ति तब कैसा व्यवहार करता है जब उसे लगता है कि कोई नहीं देख रहा है।

#### 4. झूठ बोलने की आदत

भरोसा किसी भी संबंध की नींव है। यदि आपका साथी छोटे या बड़े झूठ बोलते पकड़ा जाता है, तो यह लाल झण्डि है। ईमानदारी खराई की पहचान होती है, और इसके बिना कोई भी संबंध फल-फूल नहीं सकता है।

#### 5. क्रोध पर काबू न होना या अस्वस्थ विवाद

हर जोड़ा झगड़ता है, लेकिन एक-दूसरे के झगड़े को कैसे सुलझाते हैं, यह बहुत कुछ कहता है। क्या वे चुप हो जाते हैं, भड़क उठते हैं, या बातचीत करने से इनकार कर देते हैं? क्या वे अपनी समस्याओं के लिए ज़िम्मेदारी लेने के बजाय दूसरों को दोष देते हैं? यदि ऐसा है, तो ये संकेत हैं कि वे स्वस्थ संबंध के लिए भावनात्मक रूप से पर्याप्त परिपक्व नहीं हैं।

## हरी झण्डियाँ

हरी झण्डियाँ वे संकेत हैं जो एक धर्मी और स्वस्थ संबंध की ओर इशारा करते हैं। ये दर्शाती हैं कि यह व्यक्ति न केवल आपके लिए उपयुक्त है, बल्कि आपके आत्मिक जीवन को भी प्रोत्साहित करेगा।

### 1. मजबूत विश्वास और परमेश्वर से प्रेम

एक धर्मी साथी परमेश्वर को आपसे अधिक प्रेम करेगा। यह उसके शब्दों, कार्यों और प्राथमिकताओं में स्पष्ट होगा। वह आपको आध्यात्मिक रूप से बढ़ने और मसीह पर केन्द्रित संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

### 2. निरन्तर दया और सम्मान

आपका साथी साधारण परिस्थितियों में आपके साथ कैसा व्यवहार करता है? क्या वह धैर्यवान, दयालु और आदरपूर्ण है? क्या वह आपके विचारों को सुनता है, भले ही असहमत हो? सच्चा प्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्मों में प्रकट होता है।

### 3. भावनात्मक परिपक्वता और उत्तरदायित्व

कोई भी सिद्ध नहीं है, परन्तु हरी झण्डियाँ यह है कि वह व्यक्ति बढ़ने को तैयार है। स्वस्थ साथी अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेता है, गलत होने पर क्षमा माँगता है, और परिपक्वता के साथ विवादों को सुलझाता है।

### 4. आपको अपने सर्वोत्तम रूप में पहुँचने के लिए प्रेरित करता है

एक अच्छा संबंध आपको आपके उद्देश्य से दूर नहीं खींचता है — बल्कि आपको उस व्यक्ति में विकसित होने में सहायता करता है जिसे परमेश्वर ने बनाया है। यदि आपका साथी आपके लक्ष्य, आपके विश्वास, और आपके विकास को प्रोत्साहित करता है, तो यह धर्मी संबंध की पहचान है।

### 5. विश्वास और खुले मन से संवाद

विश्वास पर आधारित संबंध सुरक्षित महसूस कराता है। आपको यह सोचने की ज़रूरत नहीं होगी कि आप कहाँ खड़े हैं, बेईमानी के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी, या ऐसा महसूस करने की ज़रूरत नहीं होगी कि आपको सावधानी से चलना होगा। इसके बजाय खुला और ईमानदारी से भरा संवाद होता है।

### प्रक्रिया के दौरान परमेश्वर पर भरोसा रखना

दिन के अंत में, कोई संबंध सिद्ध नहीं होता है। किन्तु सही संबंध परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह और सत्य को प्रतिबिंबित करता है। यही कारण है कि प्रार्थना और परख अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

याकूब 1:5 स्मरण हमें दिलाता है, “पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।” परमेश्वर आपको ऐसे संबंध की ओर अगुवाई करना चाहता है जो उसका आदर करे। जब आप उसका मार्गदर्शन खोजते हैं, तो वह स्पष्टता और शान्ति देगा।

**चर्चा: डेटिंग अर्थात् प्रणय-निवेदन और विवाह में आप परमेश्वर का मार्गदर्शन कैसे खोजते हैं?**

अपने संबंधों या जीवनसाथी में आप जो गुण चाहते हैं, उनके बारे में सोचें। क्या आप ऊपरी आकर्षणों की बजाय विश्वास और चरित्र को प्राथमिकता दे रहे हैं? क्या आप अपनी समझ पर भरोसा करने के बजाय प्रार्थना में बुद्धि की खोज कर रहे हैं?

एक धर्मी संबंध सिद्धता ढूँढने के बारे में नहीं है — यह उस व्यक्ति को खोजने के बारे में है जो आपके साथ मिलकर विश्वास में चले। और जब आप अपने हृदय को परमेश्वर को सौंपते हैं, तो वह सही समय पर सही व्यक्ति की ओर ले जाता है।

## 4

# मसीह-केंद्रित विवाह का निर्माण

विवाह उन सबसे सुन्दर संबंधों में से एक है जिन्हें परमेश्वर ने बनाया। किन्तु यह सबसे चुनौतीपूर्ण भी है। यह केवल प्रेम और रोमांस का विषय नहीं है—यह प्रतिबद्धता, त्याग और प्रतिदिन साथ मिलकर परमेश्वर का आदर करने के चुनाव के बारे में है।

मसीह-केंद्रित विवाह साधारण "खुशहाल विवाह" से भिन्न है। यह केवल भावनाओं या व्यक्तिगत इच्छाओं पर आधारित नहीं है—यह विश्वास, निःस्वार्थता, और मसीह में एक साझा प्रतिबद्धता पर आधारित है। इफिसियों 5:25 हमें याद दिलाता है, "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।" इस प्रकार का प्रेम केवल स्नेह के बारे में नहीं है—यह सेवा, धैर्य, और अटूट समर्पण के बारे में है।

### एक ऐसा विवाह जो मसीह को प्रथम स्थान देता है

जब दो लोग विवाह करते हैं, वे केवल पति और पत्नी नहीं बनते हैं। वे एक टीम बन जाते हैं, जो अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए साथ मिलकर काम करते हैं। किन्तु यदि मसीह केन्द्र में न हो, तो समय के साथ उस विवाह की नींव कमजोर हो सकती है।

एक परमेश्वर-केंद्रित विवाह का अर्थ है कि दोनों जीवनसाथी सबसे पहले परमेश्वर का पीछा कर रहे हों। इसका अर्थ है कि निर्णय विश्वास के साथ लिए जाते हैं, चुनौतियों का सामना प्रार्थना के साथ किया जाता है, और प्रेम अनुग्रह के साथ प्रदर्शित किया जाता है। यह पूर्ण होने के बारे में नहीं है—बल्कि एक साथ विश्वास में बढ़ने की इच्छा रखने के बारे में है।

### ऐसा प्रेम जो मसीह को प्रतिबिंबित करता है

बाइबल विवाह की तुलना मसीह के कलीसिया के प्रति प्रेम से करती है। यह प्रेम का सर्वोच्च मानक है—जो कि बिना शर्त, बलिदानी, और स्थायी है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

पतियों के लिए, इसका अर्थ नम्रता के साथ नेतृत्व करना है, प्रभुता करना नहीं है। इसका अर्थ अपनी पतियों से उसी निःस्वार्थता के साथ प्रेम करना है जैसा यीशु ने दिखाया। पतियों के लिए, इसका अर्थ अपने पतियों का आदर और समर्थन करना है जिस प्रकार वे विश्वास में साथ चलते हैं। यह नियंत्रण के बारे में नहीं है — साझेदारी के बारे में है। एक ऐसा विवाह जिसमें दोनों पति-पत्नी प्रेम में एक-दूसरे की सेवा करते हैं, वह विवाह है जो परमेश्वर की योजना को प्रतिबिम्बित करता है।

### संवाद और अनुग्रह

विवाह में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक संवाद है। गलतफहमियाँ, निराशाएँ, और असहमति अनिवार्य हैं। किन्तु मसीह-केंद्रित विवाह में, संवाद केवल अपना दृष्टिकोण बताने का साधन नहीं है — यह सुनने, समझने, और अनुग्रह दिखाने का माध्यम है।

नीतिवचन 15:1 कहता है, “कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।” हम अपने साथी से कैसे बोलते हैं, वह मायने रखता है। शब्द या तो चंगा कर सकते हैं या चोट पहुँचा सकते हैं। दयालुता और धैर्य के साथ संवाद करना एक मजबूत विवाह के लिए आवश्यक है।

### एक साथ प्रार्थना करना

जो दम्पति साथ में प्रार्थना करता है, वह अपने विवाह को ठोस नींव पर बनाता है। प्रार्थना केवल कलीसिया में की जाने वाली बात नहीं है — यह एक दैनिक अभ्यास है जो आपके संबंध में परमेश्वर को आमंत्रित करती है।

जब दम्पति साथ में प्रार्थना करते हैं, वे अपने भय, आशाएँ और संघर्ष परमेश्वर के सम्मुख सौंपते हैं। वे अपने निर्णयों में उसकी बुद्धि को आमंत्रित करते हैं। वे एक-दूसरे को यह स्मरण कराते हैं कि चाहे वे किसी भी चुनौती का सामना करें, वे अकेले नहीं हैं — परमेश्वर उनके बीच में है, उनको एक साथ थामे हुए है।

### क्षमा और धैर्य

कोई भी विवाह त्रुटियों से मुक्त नहीं होता है। झगड़े, गलतफहमियाँ, और निराशा के क्षण आएँगे। किन्तु मसीह-केंद्रित विवाह कटुता के बजाय क्षमा चुनता है।

कुलुस्सियों 3:13 हमें याद दिलाता है, “और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।”

जिस प्रकार मसीह हमें क्षमा करता है, वैसे ही हमें अपने जीवनसाथी को क्षमा करने के लिए बुलाया गया है। नाराज़गी को पकड़े रखना विवाह को कमजोर कर देता है। किन्तु कठिनाई के समय पर भी अनुग्रह दिखाने का चुनाव चंगाई और बढ़ोतरी लाता है।

### **आत्मिक रूप से एक साथ बढ़ना**

एक मजबूत विवाह स्वतः नहीं बनता है—यह प्रयास, समर्पण, और विश्वास में साथ बढ़ने की साझा इच्छा माँगता है। जो दम्पति आत्मिक रूप से साथ बढ़ते हैं, वे अपने बंधन को मजबूत करते हैं। इसका स्वरूप इस प्रकार हो सकता है:

- बाइबल का एक साथ अध्ययन करना
- एक दम्पति के रूप में कलीसिया में जाना और आराधना करना
- कठिन समय में एक दूसरे को विश्वास में उत्साहित करना
- अन्य लोगों की सेवा करना और रोज़मर्रा के जीवन में परमेश्वर के प्रेम को जीना

आत्मिक रूप से बढ़ने वाला विवाह वही है जो टिकता है।

### **हर दिन प्रेम चुनना**

प्रेम केवल एक भावना नहीं है—यह एक चुनाव है। हर दिन दम्पति को एक-दूसरे से प्रेम करने का निर्णय लेना होता है, भले ही भावनाएँ फीकी पड़ जाएँ या चुनौतियाँ आएँ।

मसीह-केन्द्रित विवाह का अर्थ प्रेम के अपने आप मजबूत बने रहने का इंतजार करना नहीं है—इसका अर्थ विश्वास, प्रार्थना और निःस्वार्थता के माध्यम से उसे सक्रिय रूप से पोषित करना है। जब दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे से उसी तरह प्रेम करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं जिस तरह मसीह प्रेम करता है, तो वे एक ऐसे विवाह को बनाते हैं जो न केवल टिकाऊ होता है बल्कि फलता-फूलता भी है।

एक मजबूत, टिकाऊ विवाह सिद्धता के बारे में नहीं है—यह दो असिद्ध लोगों के बारे में है जो एक सिद्ध परमेश्वर पर निर्भर होते हैं। और जब वह केन्द्र में होता है, तो प्रेम मजबूत होता है, धैर्य बढ़ता है, और विवाह उसके अनुग्रह का सुंदर प्रतिबिम्ब बन जाता है।

### **विश्वास, प्रेम, और प्रतिबद्धता को विवाह में प्राथमिकता देना**

विवाह एक कानूनी बंधन या रोमांटिक संबंध से कहीं बढ़कर है—यह परमेश्वर द्वारा रचित एक वाचा है। यह एक आजीवन प्रतिबद्धता है कि एक-दूसरे से प्रेम करो, सेवा करो, और एक-दूसरे का आदर करो, जो मसीह के अपनी कलीसिया के प्रति प्रेम को प्रतिबिम्बित करती है। किन्तु एक विवाह को वास्तव में फलने-फूलने के लिए, इसे विश्वास, प्रेम और प्रतिबद्धता की मजबूत नींव पर बनाना आवश्यक है। इनके बिना, गहरी भावनाएँ भी फीकी पड़ सकती हैं और चुनौतियाँ भारी लग सकती हैं।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

तो, हम विवाह में विश्वास, प्रेम और प्रतिबद्धता को प्राथमिकता कैसे दें? हम कैसे सुनिश्चित करें कि हमारा संबंध मजबूत रहे और परमेश्वर उसके केन्द्र में बना रहे?

### मसीह को केन्द्र में रखना

मसीह-केंद्रित विवाह का अर्थ यह नहीं है कि विवाह सिद्ध होगा, परन्तु इसका अर्थ है कि पति और पत्नी दोनों हर कार्य में परमेश्वर को प्रथम स्थान दें। जब संबंध की नींव विश्वास हो, तो हर चुनौती, निर्णय और आनन्द का क्षण बुद्धि, धैर्य और अनुग्रह के साथ निभाया जाता है।

मत्ती 6:33 हमें याद दिलाता है, “इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।” जब दोनों जीवनसाथी परमेश्वर को सब कुछ से ऊपर रखते हैं, तो उनके संबंध में बाकी सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता है।

इसका अर्थ साथ में प्रार्थना करना, साथ में आराधना करना, और मार्गदर्शन के लिए पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ना है। इसका अर्थ आत्मिक बढ़ोतरी के लिए समय निकालना है, न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि एक दम्पति के रूप में भी। जब परमेश्वर केन्द्र में होता है, तो प्रेम मजबूत होता है और प्रतिबद्धता गहरी होती है।

### हर दिन प्रेम चुनना

विवाह में प्रेम केवल भावनाओं का विषय नहीं है—यह एक दैनिक निर्णय है। कुछ दिनों में प्रेम सहज लगता है, परन्तु अन्य दिनों में इसके लिए धैर्य, अनुग्रह, और निःस्वार्थता की आवश्यकता होती है।

1 कुरिन्थियों 13:4-7 प्रेम का वर्णन करता है जो भावनाओं से परे है। “प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।” प्रेम व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं है परन्तु एक-दूसरे की सेवा और उन्नति के लिए है।

प्रेम चुनने का अर्थ छोटे-छोटे क्षणों में दयालुता दिखाना है—कठोर शब्द के बजाय एक कोमल शब्द कहना, समझदारी के साथ सुनना, और अपने साथी की आवश्यकताओं को अपनी इच्छाओं के ऊपर रखना है। इसका अर्थ है कि अपने वायदे के प्रति विश्वासयोग्य रहना, भले ही चुनौतियाँ आएँ।

### हर समय में प्रतिबद्धता

हर विवाह अलग-अलग समयों से होकर गुजरता है—कुछ आनन्द से भरी हुई, और कुछ संघर्षों से भरी हुई। प्रतिबद्धता की सच्ची परीक्षा आसान समयों में नहीं होती है बल्कि कठिन क्षणों में होती है।

## एक धर्मी जीवनसाथी को पाना

जब चुनौतियाँ आती हैं—चाहे आर्थिक संघर्ष हों, गलतफहमियाँ हों, या निजी कठिनाइयाँ—तो प्रतिबद्धता का अर्थ दृढ़ बने रहना और उन कठिनाइयों को साथ मिलकर पार करना है। इसका अर्थ यह चुनना है कि दूर न जाएँ, बल्कि इस संबंध के लिए संघर्ष करते रहें।

सभोपदेशक 4:9-10 हमें स्मरण दिलाता है, “एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा।” एक धर्मी विवाह पारस्परिक सहायता पर आधारित होता है। इसका अर्थ एक-दूसरे का साथ देना है, चाहे कुछ भी हो जाए।

प्रतिबद्धता का अर्थ यह भी है कि उस संबंध को उन सभी बातों से बचाना जो उसे कमजोर करने का प्रयत्न करती हैं—चाहे वह ध्यान भटकाने वाली बातें हों, बाहरी प्रभाव हों, या यहाँ तक कि व्यक्तिगत संघर्ष भी हों। साथ में समय बिताने को प्राथमिकता देना, सीमाएँ तय करना और बातचीत को खुला रखना, विवाह की रक्षा करने में सहायता करता है।

### क्षमा और अनुग्रह का अभ्यास करना

कोई भी विवाह गलतियों से मुक्त नहीं होता है। निराशा, दुःख और चोट जैसे क्षण भी आएँगे। किन्तु एक मजबूत विवाह को जो चीज अलग बनाती है, वह क्षमा करने और अनुग्रह प्रदान करने की क्षमता है।

कुलुस्सियों 3:13 कहता है, “और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह तो और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।”

क्षमा का अर्थ समस्याओं को अनदेखा करना नहीं है, बल्कि आक्रोश को छोड़ देने का चुनाव करना है। अतीत की गलतियों को पकड़े रहने से केवल दूरी पैदा होती है, जबकि अनुग्रह प्रदान करने से चंगाई मिलती है। मसीह-केन्द्रित विवाह में, दोनों पति-पत्नी समझते हैं कि जिस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया है, ठीक उसी प्रकार उन्हें भी एक-दूसरे को क्षमा करना चाहिए।

### विवाह में परमेश्वर का आदर करना

विवाह केवल दो लोगों के बीच का संबंध नहीं है—यह संबंध के माध्यम से परमेश्वर की महिमा करने के बारे में भी है। जो दम्पति अपने विवाह में परमेश्वर का आदर करते हैं, वह दूसरों के लिए एक ज्योति है, और यह दिखाता है कि निःस्वार्थ प्रेम और विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करने का क्या अर्थ है।

यह इस प्रकार किया जा सकता है:

- आलोचना के स्थान पर प्रोत्साहन के वचन बोलना।
- घमण्ड के स्थान पर नम्रता को चुनना।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

- प्रतिदिन एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करना।
- दम्पति के रूप में दूसरों की सेवा करना।

इफिसियों 5:21 हमें स्मरण दिलाता है, “मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।” इसका अर्थ है कि विवाह का आधार प्रभुत्व नहीं है बल्कि आपसी प्रेम और आदर है।

**चर्चा:** अपने संबंध में परमेश्वर का आदर करने के लिए आप कौन से कदम उठा सकते हैं?

विचार करें कि किस प्रकार आप विश्वास, प्रेम और प्रतिबद्धता को प्राथमिकता देकर अपने विवाह को अधिक मजबूत बना सकते हैं। क्या ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें आपको एक दम्पति के रूप में आत्मिक रूप से और बढ़ने की आवश्यकता है? अपने संबंध में प्रार्थना और आराधना को बड़ा भाग कैसे बना सकते हैं?

विवाह एक यात्रा है, और प्रत्येक दिन एक अवसर है कि हम और निकट आएँ—न केवल एक-दूसरे के, बल्कि परमेश्वर के भी।

जब एक दम्पति मसीह के प्रेम के समान प्रेम करने की प्रतिबद्धता करता है, तो उनका विवाह उसकी विश्वासयोग्यता की गवाही बन जाता है।



## अंतिम विचार

जीवन साथी चुनना आपके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है। यह केवल आकर्षण, समान रुचियों या प्रेम से कहीं अधिक बढ़कर है—बल्कि परमेश्वर का आदर करने वाले और मजबूत, स्थायी विवाह की नींव रखने वाले संबंध को चुनने पर आधारित है। यद्यपि लाल झंडे और हरे झंडे पहचानना आवश्यक है, परन्तु बड़ा उद्देश्य है बुद्धि की खोज करना, परमेश्वर के समय पर भरोसा करना, और ऐसे संबंध के प्रति प्रतिबद्ध होना जो उसके उद्देश्य से मेल खाता हो।

संकेत खोजने में, अच्छे और बुरे लक्षणों को एक सूची के समान परखने में उलझ जाना आसान है। किन्तु संबंध किसी गणितीय सूत्र जैसे नहीं होते हैं। कोई भी व्यक्ति सिद्ध नहीं है, और हर एक दम्पति चुनौतियों का सामना करेंगे। मुख्य बात केवल लाल झंडों से बचना या हरे झंडों को ढूँढ़ना नहीं है—बल्कि उस संबंध को बढ़ाना है जो मसीह के प्रेम को दर्शाता हो। इसका अर्थ विकास की प्रतिबद्धता, गलतियों से सीखना, और प्रतिदिन प्रेम को चुनना है।

विवेक का अर्थ किसी साथी की हर कमी को भय से जाँचना नहीं है, बल्कि बुद्धि से देखना है। यह स्वयं से पूछना है, “क्या यह संबंध मुझे परमेश्वर के निकट ला रहा है?” “क्या हम एक साथ विश्वास और चरित्र में बढ़ रहे हैं?” सबसे स्वस्थ संबंध सिद्धता पर नहीं, बल्कि दो लोगों पर आधारित होते हैं जो मसीह में बढ़ने के लिए तैयार होते हैं, एक-दूसरे को क्षमा करते हैं, और जीवन के उतार-चढ़ाव के दौरान एक साथ चलने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।

संबंधों में जल्दबाज़ी करने का प्रलोभन हो सकता है, खासकर जब भावनाएँ बहुत ज़्यादा बढ़ जाती हैं। किन्तु परमेश्वर के समय का इंतज़ार करना और उसका मार्गदर्शन प्राप्त करना हमेशा सर्वोत्तम परिणाम की ओर ले जाएगा। नीतिवचन 3:5-6 हमें याद दिलाता है, *“तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।”* इसका अर्थ है अपने प्रेम जीवन को उसके प्रति समर्पित करना। इसका अर्थ है प्रार्थना करना, सुनना, और भरोसा करना कि परमेश्वर जानता है कि आपके लिए क्या सर्वोत्तम है—तब भी जब प्रतीक्षा करना कठिन लगता है। विश्वास पर आधारित संबंध जीवन के तूफानों का सामना कर सकता है क्योंकि इसकी नींव अडिग होती है।

## क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

डेटिंग से परे, विवाह एक आजीवन यात्रा है। यह केवल खुश रहने के बारे में नहीं है —यह विश्वास में बढ़ने, निःस्वार्थ प्रेम करना सीखने और कठिन परिस्थितियों में भी प्रतिबद्धता चुनने के बारे में है। मसीह-केन्द्रित विवाह विश्वास पर आधारित होता है, जिसमें हम साथ मिलकर परमेश्वर की खोज करते हैं और उसे केन्द्र में रखते हैं। यह प्रतिदिन प्रेम करने का चुनाव करने के बारे में है, न कि केवल तब जब यह आसान हो। यह प्रतिबद्धता के बारे में है, जीवन के हर मोड़ पर एक-दूसरे का साथ देने के बारे में है, क्षमा करने, अनुग्रह प्रदान करने और द्वेष को त्यागने के बारे में है। संवाद बहुत बड़ी भूमिका निभाता है—अर्थात् यह दयालुता से बोलना, धैर्य से सुनना, और बुद्धिमता से विवादों को सुलझाना होता है।

अंततः, संबंध प्रयास माँगते हैं, परन्तु जब मसीह केन्द्र में होता है, तो वे फलते-फूलते हैं। विवाह सिद्धता के बारे में नहीं है—यह दो असिद्ध लोगों के बारे में है जो एक सिद्ध परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं। चाहे आप अकेले हों या विवाहित हों, परमेश्वर की बुद्धि खोजें, उसके समय पर भरोसा करें, और ऐसा संबंध बनाएँ जो उसके प्रेम को प्रतिबिम्बित करे। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप पाएँगे कि प्रेम केवल सही व्यक्ति ढूँढने के बारे में नहीं है—बल्कि स्वयं सही व्यक्ति बनने, विश्वास में बढ़ने, और उस मार्ग पर चलने के बारे में है जिसे परमेश्वर ने आपके लिए निर्धारित किया है।



CHRISTIAN LINGUA टीम विश्व की सबसे बड़ी मसीही अनुवाद एजेंसी है, जो विश्वभर में वीडियो, ऑडियो और मीडिया परियोजनाओं के लिए अनुवाद और ओवरडब सेवाएँ प्रदान करती है।

